ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 25 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 15 मई, 2023 से रविवार 21 मई, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 |
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में

आर्य समाज के विभिन्न संगठनों द्वारा आयोजित

ग्रीष्मकालीन शिविरों में अधिकाधिक भाग लें बालक-बालिकाएं

कार्यक्रमानुसार आप सभी सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

भारत के 13 राज्यों के वनवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का संस्कार एवं चरित्र निर्माण हेतु

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में 40वां वैचारिक क्रांति शिविर

दिनांकः- शुक्रवार 19 से 28 मई 2023

उद्घाटन समारोहः- शुक्रवार 19 मई 2023 सायं 06:00 बजे

स्थानः- झंग भवन, कैप्टन सतीश मार्ग रानीबाग, दिल्ली

शिविर सान्निध्यः- सुरेन्द्र कुमार आर्य, प्रधान, दयानंद सेवाश्रम संघ

समापन समारोहः- रविवार 28 मई 2023 सायं 4:00 बजे

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

1000 आर्य वीरों का 10 दिवसीय आवासीय चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

स्थान एवं दिनांकः- डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद (26 मई से 4 जून 2023)

उदघाटन एवं समापन समारोहः- 27 मई 2023 उदघाटन सायं 5 बजे एवं 4 जून 2023 समापन समरोह सायं 4 बजे

शिविरार्थियों हेतु निर्देशः ❖ शिविरार्थियों की आयु 12 वर्ष से अधिक हो। ❖ शिविर शुल्क 300/- रुपये प्रति शिविरार्थी होगा। ❖ शिविरार्थी फार्म 20 मई तक शिविर शुल्क के साथ कार्यालय में जमा करवाएं ❖ शिविरार्थी अपने साथ कोई कीमती सामान न लाएं। ❖ शिविरार्थी भोजन के लिए थाली, गिलास, चम्मच, कटोरी, ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लाएं। ❖ खाकी हाफ पैण्ट, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद मोजे व जूते, दल की टोपी, लंगोट, लाठी, टार्च साथ लाएं। गणवेश की उपलब्धता शिविर स्थल पर भी रहेगी।

निवेदकः-

जगवीर आर्य	बृहस्पति आर्य	सुन्दर आर्य	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	एस.के. शर्मा	अजय सहगल	बृजेश आर्य
संचालक	महामंत्री	कोषाध्यक्ष	प्रधान	महामंत्री	महामंत्री	सचिव	अधिष्ठाता
	9990232164	9899008054	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा		आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा		

युवा शक्ति के चरित्र निर्माण हेतु इस विशाल शिविर में सहयोग हेतु (आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश) के नाम नकद, चेक या यूनियन बैंक खाता संख्या 520101253203127, IFSC Code UBIN0901415 शाखा कनॉट प्लेस में सीधे जमा कराकर 9899008054, 9990232164 पर सूचित कर रसीद अवश्य प्राप्त करें।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल राष्ट्रीय शिविर का आयोजन

दिनांक 01 से 15 जून 2023

स्थानः- गुरुकुल विश्वभारती भैयापुर लाढ़ौत रोड, रोहतक- 124001 (हरियाणा)

शिविराध्यक्षः- स्वामी देवव्रत सरस्वती

इस शिविर में शाखानायक, उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी को शारीरिक और बौद्धिक प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा।

प्रवेश शुल्कः उप व्यायाम व व्यायाम शिक्षक 1000/- रुपये, शाखानायक 800/- रुपये।

आवश्यक सामानः खाकी हाफ पैण्ट, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद मोजे व जूते, लाठी, नोटबुक, अन्य दैनिक प्रयोग में आने वाला आवश्यक सामान। पाठय पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।

- ❖ शिविर में अनुशासन का पालन अनिवार्य होगा। अनुशासन न मानने वाले शिविरार्थी को शिविर से पृथक् भी किया जा सकेगा।
- ❖ अपने साथ कीमती सामान न लायें।

सम्पर्क करें

आचार्य हरिदत्त उपाध्याय	स्वामी देवव्रत सरस्वती	सत्यवीर आर्य
शिविर संयोजक	शिविराध्यक्ष	प्रधान संचालक
	9868620631	9417489461
आचार्य नन्दकिशोर		प्रवीण शास्त्री स्वामी
शिविर प्रबन्धक		प्रधान व्यायाम शिक्षक
9466436220		9467071733

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल राष्ट्रीय शिविर का आयोजन

दिनांक 16 से 23 जून 2023

स्थानः- आर्ष महाविद्यालय कन्या गुरुकुल, नरेला, दिल्ली- 110040

शिविराध्यक्षः- स्वामी देवव्रत सरस्वती

सार्वदेशिक आर्यवीर दल की इकाई सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर 16 से 24 जून 2023 तक कन्या गुरुकुल नरेला में लगाया जायेगा जिसमें आर्य वीरांगनाओं को शाखानायक श्रेणी की शारीरिक प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा।

प्रवेश शुल्कः 600/- रुपये।

आवश्यक सामानः गणवेश सफेद कुर्ता, सलवार, सफेद मोजे व जूते, केसरिया चुन्नी, लाठी, नोटबुक, अन्य दैनिक प्रयोग में आने वाला आवश्यक सामान पाठय पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।

- ❖ आर्य वीरांगना आर्य वीरांगना दल अथवा आर्य समाज के अधिकारी का संस्तुति पत्र, अपना पासपोर्ट फोटो, आधार कार्ड की फोटोकापी भी लायें।
- ❖ जिन्होंने आर्य वीरांगना दल की प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण की है, उन्हीं को प्रवेश मिलेगा।
- ❖ अपने साथ कीमती सामान न लायें।

मार्गः पुरानी दिल्ली से 131, 136 नम्बर बस पकड़कर कन्या गुरुकुल पहुंचें। दिल्ली से रेल द्वारा नरेला रेलवे स्टेशन से टैम्पो द्वारा कन्या गुरुकुल पहुंचें।

सम्पर्क करें

सोमवीर शास्त्री	आचार्य सविता	चौधरी देवीसिंह मान
महामंत्री आचार्या	प्रधान	
9999299300	9999655363	

वेदवाणी-संस्कृत

श्रद्धा से सत्य-परमात्म-प्राप्ति

वेद-स्वाध्याय

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥
-यजुः 19 । 30

ऋषिः-हैमवर्चिः॥ देवता-यज्ञः॥ छन्दः-अनुष्टुप्॥

शब्दार्थ- **व्रतेन**=व्रत से, सत्यनियम के पालन से मनुष्य **दीक्षाम्**=दीक्षा को, प्रवेश को **आप्नोति**=प्राप्त करता है। **दीक्षया**=दीक्षा से **दक्षिणाम्**=दक्षिणा को, वृद्धि को, बढ़ती को **आप्नोति**=प्राप्त करता है। **दक्षिणा**=दक्षिणा से **श्रद्धाम्**=श्रद्धा को **आप्नोति**=प्राप्त करता है और **श्रद्धया**=श्रद्धा द्वारा सदा **सत्यम्**=सत्य को **आप्यते**=प्राप्त किया जाता है।

विनय- प्यारे! क्या तू सत्य को पाने के लिए व्याकुल हो गया है? यदि हाँ, तो तू आ, इन चार सीढ़ियों द्वारा तू अवश्य 'सत्य' को पा जाएगा। प्रारम्भ में यदि तुझे सचमुच सत्य से प्रेम है तो तुझे जहाँ कहीं जो कोई सच्चा नियम, सत्यनियम, व्रत पता लगेगा तू उसे अवश्य पालन करने लग पड़ेगा। इस तरह व्रतों को जानने और यथाशक्ति पालन करने की तेरी प्रवृत्ति तुझे शीघ्र दीक्षा का पात्र बना देगी। दीक्षित हो जाने पर तू पहली सीढ़ी चढ़ जाएगा। दीक्षित हो जाना मानो सत्य के साम्राज्य में घुसने का प्रवेशपत्र (परवाना) पा लेना है और सत्य के दरबार में पहुँचने का अधिकारी बन जाना है। दीक्षित हो जाने की इस पहली सीढ़ी पर जब तू चढ़ जाएगा तो तू सत्य के वायुमण्डल में रहने वाला हो जाएगा और तेरा सत्यप्रेमी साथियों का परिवार बन जाएगा। तब तेरे लिए अपने अन्य सत्यपथिक भाइयों के अनुभव से लाभ उठाते हुए सत्यनियमों को जान लेना और उनका यथावत् पालन करना बहुत सहज हो जाएगा। एवं, आगे-आगे सत्य के पालन में अभ्यस्त होता हुआ तू तीसरी सीढ़ी पर भी तब पहुँच जाएगा जब तुझे यह स्वात्म-अनुभव हो जाएगा कि सत्य के पालन से तेरी वृद्धि (दक्षिणा) होती है, तेरी उन्नति होती है। तब तू स्वयमेव अनुभव करेगा कि सत्य के पालन से तू बलवान् और उन्नत हो रहा है। कुछ आश्चर्य नहीं यदि उस समय बाहर का संसार भी तुझे प्रतिष्ठा देता हुआ और तेरे प्रति नानाविध दक्षिणाएँ लाता हुआ तेरी दक्षता, बलवत्ता और बढ़ती को स्वीकार करे। तुझे अपने-आप तो अपनी वृद्धि अनुभूत होगी ही। यह अनुभव ही तुझमें सत्य के लिए श्रद्धा उत्पन्न कर देगा और तुझे श्रद्धा की तीसरी सीढ़ी पर पहुँचा देगा। तब तुझमें सत्य के लिए ऐसी अटल श्रद्धा हो जाएगी कि तू त्रिकाल में भी यह शक न करेगा कि कभी सत्य तेरी हानि भी कर सकता है। श्रद्धा पा जाने पर मनुष्य बड़ी तीव्र गति से आगे बढ़ने लगता है, अतः जब तू अपनी श्रद्धा में मग्न होकर सत्य के केवल सत्य के पा लेने के लिए व्याकुल एवं एकाग्र होकर अग्रसर हो रहा होगा तो इससे अगली उच्च सीढ़ी पर पैर रखते ही तुझे 'सत्य' के दर्शन हो जाएँगे, 'सत्य' का साक्षात्कार हो जाएगा, अपने प्यारे सत्य का साक्षात्कार हो जाएगा।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

उत्तम स्वास्थ्य के लिए मोटे अनाज (श्री अन्न) को करें आहार में शामिल

प्रयोग करें, स्वस्थ रहें- आर्य समाज का मानवमात्र को आह्वान

आधुनिक परिवेश में युग की करुण पुकार है उत्तम स्वास्थ्य। दिनों दिन बढती बीमारियों के चलतें केवल देश ही नहीं विश्व स्तर पर स्वस्थ रहना मानवमात्र के लिए एक चुनौती बन गई है। यह सर्वविदित है कि भारत देश वर्ष 2023 को मोटे अनाज के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष के रूप में मना रहा है। विश्व के 70 देशों ने भी इसे मनाने की सहमति दी है। कुछ दिन पहले महर्षि दयानन्द सरस्वती जी 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रखला का शुभारंभ करते हुए 12 फरवरी 2023 को भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपने ऐतिहासिक उदबोधन में आर्य समाज से अपेक्षाएं व्यक्त करते हुए कहा था कि भारत में मिलेट मोटे अनाज बाजरा-ज्वार जिनसे हम परिचित हैं, और मिलेट को हमने विश्व की पहचान बनाने के लिए एक नया नामकरण किया है। हमने कहा है मिलेट को श्री अन्न। इस वर्ष पूरा राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय मिलेट दिवस मना रहा है। और हम तो जानते हैं, हम तो यज्ञीय संस्कृति के लोग हैं, और हम यज्ञों की आहुति में जो सर्वश्रेष्ठ अन्न हैं, जौं की आहुति देते हैं। हमारे यहां यज्ञों में जौं जैसे मोटे अनाज या श्री अन्न की अहम भूमिका होती है। क्योंकि हम यज्ञों में वह इस्तेमाल करते हैं जो हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ होता है। इसलिए यज्ञ के साथ-साथ सभी मोटे अनाज श्री अन्न से देशवासियों के जीवन और आहार को ज्यादा से ज्यादा जोडें। अपने नित्य आहार में वो हिस्सा बने। इसके लिए हमें नई पीढ़ी को भी जागृत करना चाहिए। और आप इस काम को आसानी से कर सकते हैं।

> **"महर्षि दयानन्द सरस्वती जी 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रखला का शुभारंभ करते हुए 12 फरवरी 2023 को भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपने ऐतिहासिक उदबोधन में आर्य समाज से अपेक्षाएं व्यक्त करते हुए कहा था कि भारत में मिलेट-मोटे अनाज बाजरा-ज्वार जिनसे हम परिचित हैं, और मिलेट को हमने विश्व की पहचान बनाने के लिए एक नया नामकरण किया है। हमने कहा है मिलेट को श्री अन्न। इस वर्ष पूरा राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय मिलेट दिवस मना रहा है। और हम तो जानते हैं, हम तो यज्ञीय संस्कृति के लोग हैं, और हम यज्ञों की आहुति में जो सर्वश्रेष्ठ अन्न हैं, जौं की देते हैं। हमारे यहां यज्ञों में जौं जैसे मोटे अनाज या श्री अन्न की हअम भूमिका होती है। क्योंकि हम यज्ञों में वह इस्तेमाल करते हैं जो हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ होता है। इसलिए यज्ञ के साथ-साथ सभी मोटे अनाज, श्री अन्न से देशवासियों के जीवन और आहार को ज्यादा से ज्यादा जोडें। अपने नित्य आहार में वो हिस्सा बने। इसके लिए हमें नई पीढ़ी को भी जागृत करना चाहिए। और आर्य समाज इस काम को आसानी से कर सकता हैं।"**

कौन से अनाज मोटे हैं?

मोटे अनाज के नामों से बहुत से लोग परिचित हैं, जब मौसम बदलता है तो चने, बाजरे, मक्के, और ज्वार की रोटी को लोग शौक-शौक में खाते भी हैं। लेकिन इनके गुणों से अपरिचित हैं। इनके अलावा जई, कोदो, कुटकी, रागी और समा आदि भी मोटे अनाज में आते हैं।

मोटे अनाज के गुण

मोटे अनाज गुणों की खान हैं। इनकी सबसे बड़ी खासियत है इनमें पाया जाने वाला रेशा, जो खूब मात्रा में मौजूद होता है। इस रेशे के घुलनशील और अघुलनशील दोनों ही रूप हमारे शरीर में पाचन तंत्र के लिए वरदान की तरह काम करते हैं। घुलनशील रेशा पेट में कुदरती तौर पर मौजूद बैक्टीरिया को सहयोग करके पाचन को बेहतर बनाता है। वहीं अघुलनशील रेशा पाचन तंत्र से मल को इकट्ठा करने और उसकी आसान निकासी में मदद करता है। यह पानी भी खूब सोखता है यानी व्यक्ति को मोटा अनाज खाने के बाद प्यास भी खूब लगती है, जो पाचन तंत्र के लिए बहुत स्वास्थ्यकर है।

इसका मतलब यह हुआ कि महीन अनाज खाने और व्यायाम से दूर रहने के चलते जो कब्जियत और शरीर के फूलने जैसी बिन बुलाई बीमारियां हम झेलते हैं, मोटा अनाज उनका सटीक उपचार है। गेहूं में मिलने वाला प्रोटीन, ग्लूटेन इन अनाजों में नहीं होता, सो इनसे पाचन तो अच्छा होगा ही।

कैलोरीज और प्रोटीन की अनियमितता वाले कुपोषण के बारे में हम जानते हैं लेकिन सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी भी एक तरह का कुपोषण उत्पन्न करती है, जिसका आसानी से पता नहीं चलता। इसका अर्थ है आयरन, कैल्शियम, विटामिन बी जैसे पोषक तत्वों की कमी। उन वयस्कों और बच्चों में यह कमी आम है जो आटा या मैदे का उपयोग करते हैं। मोटे अनाज इन सूक्ष्म तत्वों के अच्छे स्रोत हैं। अगर भोजन में मोटे अनाजों को शामिल करें तो अनेक लाभ मिलेंगे।

आसान है मोटे अनाज उगाना

मोटे अनाजों को घास की तरह उगने वाला अनाज भी कहा जाता है, क्योंकि ये तेजी से बढ़ जाते हैं और इनके लिए बहुत अधिक संसाधनों की भी जरूरत नहीं होती। इन पौधों में छोटे-छोटे दानों के रूप में मिलता है ये अनाज, जिसका चाहे दानों के रूप में प्रयोग हो या आटे के रूप में या चीला बनाएं, चाहे खीर या लड्डू बनाएं, ये हमारी सेहत के लिए सोने-सा काम करते हैं।

कैसे करें शुरुआत

आरंभ करने और आदत डालने के लिए अपने नियमित आटे में आधा मोटे अनाज का आटा मिलाकर रोटियां बनाइए। जब आदत पड़ जाए तो मोटे अनाज को तीन-चौथाई कर लीजिए और फिर पूरी तरह से इसी का इस्तेमाल कर सकते हैं।

दूर हो जाएंगे रोग

महीन आटे जैसे मैदा की हमारे खाद्यों में भरमार है। इनके अधिक उपयोग से हृदय रोग और मधुमेह को आमंत्रण मिलता है। मिला भी है। हम दुनिया की मधुमेह की राजधानी

- शेष पृष्ठ 7 पर

संस्कार बोध

क्रमशः गतांक से आगे

यज्ञोपवीत या जनेऊ

–पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

> **वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के उत्थान में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी से प्रेरणा लेकर पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, पंडित गुरूदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानंद, स्वामी स्वतंत्रानंद, महात्मा नारायण स्वामी, पंडित तुलसीराम, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, आर्यमुनि इत्यादि हमारे महापुरुषों में गंगाप्रसाद उपाध्याय जी के चिंतन-लेखन का अपना स्थान है। उन्होंने वेदज्ञान की अविरल धारा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कठिन परिश्रम किया और प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन कर पुस्तकों के रूप में उसे वितरित भी किया। यहां पर प्रस्तुत है उपाध्याय जी द्वारा रचित यज्ञोपवीत या जनेऊ पुस्तक से क्रमशः लेख, पाठक इससे यज्ञोपवीत के महत्व को जानें और इस विशेष संस्कार से संस्कारित हों।**

(2) यो यज्ञस्य प्रसाध
नस्तन्तुर्देवेष्वाततः। तमाहुतं
नशीमहि॥

ऋग्वेद 10/57/2

अर्थ– (यः) जो (यज्ञस्य) यज्ञ को (प्रसाधनः) पूरा करने वाला (तन्तुः) सूत्र (देवेषु) विद्वानों में (आततः) फैला हुआ अर्थात् प्रचारित है (तम्) उस (आहुतं) पूज्य सूत्र को (नशीमहि) हम भी प्राप्त हों।

इस मन्त्र में बताया गया है कि विद्वानों में जनेऊ का प्रचार है, बिना जनेऊ के यज्ञ पूरा नहीं होता। इसीलिए इसको यज्ञोपवीत कहते हैं। यह सूत्र पूज्य है। इसको अवश्य धारण करना चाहिए।

(3) युवा सुवासाः परिवीत आगात्
स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति
स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥

ऋग्वेद 3/8/4

अर्थ– (युवा) नौजवान (सुवासाः) अच्छे वस्त्र पहने हुए (परिवीतः) कन्धे के चारों ओर जनेऊ धारण किए हुए ब्रह्मचारी (आगात्) आया है। (स) वह (जायमान) प्रसिद्ध होकर (श्रेयान्) सब संसार का हित करने वाला (भवति) होता है। (धीरासः) अच्छी तरह ध्यान करने वाले (मनसा देवयन्तः) मन से ईश्वर की कामना करने वाले (कवयः) विद्वान् लोग (तं) ऐसे विद्वान् को (उन्नयन्ति) आगे बढ़ाते हैं।

जिस प्रकार ऊपर के दो मन्त्रों में विद्वान् ब्रह्मचारी को सूत्रधारी बताया गया है उसी प्रकार इस मन्त्र में उसको 'परिवीत' अर्थात् यज्ञोपवीत से युक्त बताया गया है। 'परिवीत' का अर्थ है 'परि'= चारों ओर, + 'वीत'=आवेष्टित या लपेटा हुआ। यहां जनेऊ के कन्धे के चारों ओर पड़े होने की ओर संकेत है।

(4) तस्मात् प्राचीनोपवीतस्तिष्ठे
प्रजापतेनु मा बुध्यस्वेति अन्वेनं प्रजा
अनु प्रजापतिर्बुध्यते य एवं वेद॥

(अथर्व वेद 3/1/24)

अर्थ– (तस्मात्) इसलिए (प्राचीन उपवीतः) सामने जनेऊ धारण करके (तिष्ठे) खड़ा हो और प्रार्थना करे कि (प्रजापते) हे ईश्वर (मा) मुझ पर (अनु बुध्यस्व) कृपा कीजिए। (एवं) ऐसे पुरुष पर (प्रजा) लोग और (प्रजापतिः) ईश्वर (अनुबुधयते) कृपा करते हैं (य एवं वेद) जो इस रहस्य को समझता है।

इस मन्त्र में उपवीत शब्द आया है। तात्पर्य यह है कि जो विधिपूर्वक जनेऊ धारण करके विद्या की प्राप्ति और ईश्वर की प्रार्थना करता है उस पर ईश्वर और मनुष्य सभी प्रसन्नता प्रकट करते हैं।

(5) एतावद्रूपं यज्ञस्य यद्
देवैर्ब्रह्मणा कृतम्।
तदेतत् सर्वमाप्नोति यज्ञे
सौत्रामणी सुते॥

(यजुर्वेद 19/31)

अर्थ– (यज्ञस्य) यज्ञ का (एतावद् रूपं) इतना रूप (वेद्) जितना (ब्राह्मण) ईश्वर ने (देवैः) विद्वानों द्वारा (कृतं) सम्पादित कराया। (तत् एतत् सर्वम्) वह सब (सौत्रामणि सुते यज्ञे) जनेऊ धारण करने के निमित्त यज्ञ में (आप्नोति) प्राप्त होता है। 'सौत्रामणी' शब्द का अर्थ ऋषि दयानन्द कृत भाष्य में इस प्रकार है–

सूत्राणि यज्ञोपवीतादीनि मणिना
ग्रन्थिना युक्तानि ध्रियन्ते
यस्मिंस्तस्मिन्।

अर्थात् जनेऊ आदि धागे की गाँठ बनाकर जिसमें पहनी जाती है वह यज्ञ। इसी मन्त्र का अन्वय करते हुए ऋषि के भाष्य में इस प्रकार लिखा है– यो मनुष्यो यद् देवब्र्बह्म यज्ञस्यैतावद् रूपं कृतं तवेतत् सर्व सौत्रामणी सुते यज्ञ आप्नोति स द्विजत्वारम्भं करोति।

1. प्राचीनावीती भूत्वा दक्षिणासीन।

(शतपथ 2/6/1/8)

सूत्र शब्द यज्ञोपवीत का वाचक– अर्थात् सौत्रामणी यज्ञ में मनुष्य द्विज बनता है। इससे स्पष्ट है कि सौत्रामणी यज्ञ यज्ञोपवीत संस्कार ही तो है। वैदिक शब्द–माला में सूत्र शब्द यज्ञोपवीत का वाचक होता ही है। जैसा 'शिखा और सूत्र' के वाक्यांश से प्रकट होता है।

-क्रमशः अगले अंक में...

बाल बोध

जीवन का सही लक्ष्य चुनें

जब तक हम जीवन का स्पष्ट लक्ष्य नहीं चुन लेते, तब तक हमें अपने कार्य में पूर्ण सफलता नहीं मिल सकती। सही लक्ष्य वाले ही अपने जीवन में पूर्ण सफलता की प्राप्ति कर सकते हैं।

जीवन का लक्ष्य कैसा हो?

आप अपने जीवन का वही लक्ष्य चुनिए, जिसमें निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण तत्त्व शामिल हों–

1. ऐसा लक्ष्य जो समाज के हित में हो।
2. ऐसा लक्ष्य जिसमें आपकी आत्मोन्नति समाई हो।
3. ऐसा लक्ष्य जिसमें आपके जीवन की प्रगति शामिल हो।
4. ऐसा लक्ष्य जो आपको मानसिक संतुष्टि दिला सके।
5. ऐसा लक्ष्य जिससे सब सन्तुष्ट रह सकें।
6. ऐसा लक्ष्य जिससे आपका जीवन चरित्र बने या जो चारित्रिक उत्थान की दृष्टि से उत्तम हो।
7. ऐसा लक्ष्य जिसे पूर्ण करना अधिक कठिन न हो।
8. ऐसा लक्ष्य जो आपको महान बनने में मदद करे।
9. ऐसा लक्ष्य जो ईश्वर को पसंद हो।
10. ऐसा लक्ष्य जिससे आपका भविष्य उज्ज्वल बने।

जीवन का ऐसा लक्ष्य सचमुच मानव की प्रगति में सहायक होता है। आप जीवन के निम्न पक्ष लेकर अपने लक्ष्य का चयन न करें–

1. आप केवल उपार्जन की दृष्टि से लक्ष्य न चुनें। धनोपार्जन के अलावा मानवहित भी आपके जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।
2. आप व्यक्तिगत स्वार्थ को ध्यान में रखकर लक्ष्य न चुनें बल्कि सबके भले की सोचें।
3. आप दूसरों से ईर्ष्या, वैर या प्रतिशोध निकालने के लिए लक्ष्य न चुनें।
4. आप कुसंग से प्रभावित होकर लक्ष्य न चुनें।
5. आप दूसरों के कहे अनुसार लक्ष्य निर्धारित मत कीजिए। अपने विवेक से जीवन का लक्ष्य चुनिए।
6. जीवन को भटकाने वाला लक्ष्य कभी न चुनें।
7. दूसरों की होड़ से लक्ष्य निर्धारित न करें। जिसमें आपका भला हो तथा जो आपके अनुकूल हो, वही लक्ष्य चुनें।
8. कभी ऐसा लक्ष्य न चुनें जिसका आपको बाद में पछतावा हो।
9. अशुभ लक्ष्य कभी न चुनें।
10. पतनकारी लक्ष्य चुनने से बचें।

इस प्रकार व्यर्थ एवं प्रतिकूल लक्ष्य आप कभी न चुनें। जैसा कि ऊपर बताया गया है, आप अपने विवेक के अनुसार ही अपने लक्ष्य का चयन करें तो आपके लिए बेहतर होगा।

लक्ष्य की बाधाओं को दूर करने का प्रयास कीजिए

आप अपने जीवन में सदैव श्रेष्ठ लक्ष्य चुनें। लक्ष्य जितना श्रेष्ठ होगा, उसे प्राप्त करने में मुश्किलें भी अधिक होंगी। आप लक्ष्य की बाधाओं को दूर करने के बारे में सोचिए। परिस्थितियों पर गंभीर रूप से विचार करने पर आप उन मुश्किलों का कोई–न–कोई हल अवश्य निकाल लेंगे। केवल अच्छा लक्ष्य चुनना ही काफी नहीं है। लक्ष्य चुनकर उसे प्राप्त करने में काफी सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। लक्ष्य-प्राप्ति के लिए सर्वप्रथम आपको बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। जब आप लक्ष्य के अनुकूल कार्य करेंगे तथा बहुत मेहनत व लगन से कार्य करेंगे तभी आप सफलता को प्राप्त कर सकेंगे।

लक्ष्य के मुताबिक विशेषताएं धारण करें

केवल लक्ष्य श्रेष्ठ होने से ही सबकुछ नहीं होता। लक्ष्य के अनुरूप लक्षण, क्षमता तथा विशेषताएं धारण करना भी जरूरी है। जब हम लक्ष्य के अनुरूप लक्षण धारण करेंगे तभी हमको जीवन में सफलता मिल पाएगी। कॉलेज के विद्यार्थियों में सबका लक्ष्य अलग-अलग होता है। कोई पढ़-लिखकर डॉक्टर, कोई वकील या जज, कोई कलेक्टर या पुलिस ऑफिसर तो कोई सेना का बड़ा अधिकारी बनने की इच्छा रखता है। केवल इच्छा रखने से काम नहीं चलता। विद्यार्थी को अपने लक्ष्य के अनुरूप पढ़ाई की मेहनत करनी पड़ती है, लक्ष्य के अनुरूप अनेक लक्षण तथा क्षमताएं धारण करनी पड़ती हैं तब जाकर उसे अपने उद्देश्य में सफलता मिलती है।

गलत लक्ष्य चुनने से बचें

यदि आप अपने जीवन में गलत

- शेष पृष्ठ 7 पर

दिल्ली सभा द्वारा सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य जागरूकता सेवा अभियान गतिशील

झुग्गी-झोपड़ियों में एम्बुलेंस सेवा के माध्यम से लगाए जा रहे हैं निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

मायापुरी और पूवी दिल्ली की सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य जांच शिविर के दौरान सैकड़ो रोगियों ने करायी निःशुल्क स्वास्थ्य जांच

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं की नियंत्रक शिरोमणि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा राष्ट्र सेवा एवं मानव निर्माण के सैकड़ों प्रकल्प गतिशील हैं। सभा द्वारा संचालित सेवा समर्पण के इस महान अभियान में स्वास्थ्य जागरूकता सेवा से सैंकड़ों निर्धन लोग लाभान्वित हो रहे हैं। इस महत्वपूर्ण योजना का उद्देश्य है कि दिल्ली की उन समस्त सेवा बस्तियों में जहां निर्धन, मजदूर लोग रहते हैं, जहां पर छोटे छोटे झुग्गी झोपड़ी हैं, साफ सफाई भी नाम मात्र के लिए ही है, राजनीतक पार्टियां जहां केवल चुनाव के समय पर वोट मांगने के लिए ही जाती हैं, बाकी समय उन भोले भाले लोगों को यदा कदा भीड़ के रूप में ही वे प्रयोग करते हैं, उनके सुख, दुःख, पीड़ा, संताप से उनका कोई सरोकार नहीं होता। ऐसे गरीब दिहाड़ी मजदूर लोगों के कल्याण के आर्य समाज द्वारा सभा की एंबुलेंस और पूरी स्वास्थ्य जागरूकता सेवा की टीम दिल्ली में जगह जगह पर झुग्गी बस्तियों में निशुल्क स्वास्थ्य जांच कर रही है। जिसमें सुगर, बी.पी., हीमोग्लोबिन, आक्सीजन, पल्स, वजन, लम्बाई की जांच कर तुरंत रिपोर्ट दी जाती है। अभी पिछले दिनों मायापुरी और पूर्वी दिल्ली की सेवा बस्तियों में निःशुल्क जांच शिविरों का आयोजन किया गया। जिसमें दोनों स्थानों पर सैकड़ो रोगियों ने अपने विभिन्न स्वास्थ्य सम्बन्धी जांच करायी और आर्य समाज के इस सेवा कार्य के लिए आभार व्यक्त किया। इन जांच शिविरों में हर आयु वर्ग के स्त्री, पुरुष और बच्चे लाभार्थी बने।

वस्तुतः आधुनिक परिवेश में उत्तम स्वास्थ्य अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। उस पर भी भारत की राजधानी दिल्ली का प्रदूषित वातावरण, झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले निर्धन मजदूरों जो रोज कमाते और खाते हैं, जहां हवा, पानी, भोजन आदि सब बहुत कम स्वच्छ होता है। ऐसे में वहां पर बीमार लोग अपनी दिहाड़ी मजदूरी से छुट्टी न मिलने के कारण बिना स्वास्थ्य परीक्षण के लक्षणों के आधार पर दवाई खाकर ज्यादा बीमार हो जाते हैं। इन सभी समस्याओं और पीड़ाओं को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली की समस्त सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य जागरूकता सेवा अभिमान के माध्यम से सभा की एम्बुलेंस और स्वास्थ्य जागरूकता की पूरी टीम जगह जगह स्वास्थ्य परीक्षण का कार्य कर रही है। जिससे निर्धन रोगियों की बीमारी की सही जांच और उपचार संभव हो सके।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में

दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर लगातार हो रहा वेद प्रचार

पश्चिमी दिल्ली के शाहबाद मोहम्मदपुर, यादव चौपाल, बागडोला, जोहडवाला पार्क, शाहबाद मोहम्मदपुर, भरथल गांव, अमराई गांव, बुद्ध जयंती पार्क नशीरपुर, दुर्गा पार्क आदि में वेद प्रचार कार्यक्रम संपन्न

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में दिल्ली सभा द्वारा लगातार चार माह तक चलने वाली वेद प्रचार रथ यात्रा का शुभारंभ आर्य समाज मल्का गंज से आरंभ होकर आज दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता पूर्वक प्रचार करते हुए निरंतर आगे बढ़ रहा है। आर्य समाज के इस ऐतिहासिक प्रचार-प्रसार के कार्यक्रम अत्यंत लोकप्रिय सिद्ध हो रहे हैं। मानव मात्र के कल्याण हेतु सम सामयिक और वैदिक सिद्धांतों पर आधरित आर्य समाज के प्रसिद्ध उपदेशकों के भजन, प्रवचन और यज्ञो के कार्यक्रमों से प्रभावित होकर हर आयु वर्ग के लोग आर्य समाज से जुड़ रहे हैं। कई स्थानों पर जहाँ एक समय का कार्यक्रम निर्धारित होता है वहाँ दो या तीन सत्रों के कार्यक्रमों की माँग की जा रही है। वेद प्रचार रथ यात्रा के इस सफल अभियान में दिल्ली की समस्त आर्य समाज, वेद प्रचार मंडलों के अधिकारी और सभी कार्यकर्ता, आर्यजनों का सहयोग प्रशंसनीय है।

महान संकल्पों के सफल साधक श्री राजकुमार जी

संक्षिप्त परिचय एवं शिक्षा, सेवा के क्षेत्र में प्रेरणाप्रद योगदान

मनुष्य कर्मशील प्राणी है। कर्म करना मनुष्य का स्वभाव है। किंतु जो व्यक्ति अनासक्त भाव से मानव निर्माण के कार्य करता है, परोपकार की भावना और कामना को आगे रखकर कार्य करता है, सच्चे अर्थों में उसी का जीवन यशस्वी होता है और मानव समाज में वही व्यक्ति आदरणीय, अनुकरणीय और प्रशंसनीय होता है।

संस्कारों की असली धरोहर

कर्म के उपासक श्री राजकुमार जी एक ऐसे ही कर्मठ परोपकारी व्यक्तित्व के स्वामी हैं। आपका जन्म वीरभूमि पंजाब में 2 जून 1940 को मांडीफुल, बठिंडा में हुआ। आपकी परम पूज्या माता श्रीमती कौशल्यावती जी और पूज्य पिता डॉ. मेजर एस.पी. लाल जी, जो कि आर्मी में सफलतम चिकित्सक के रूप में सेवारत रहे, आप दोनों के त्याग, तपस्या, सेवा, साधना और समर्पण के महान संस्कार श्री राजकुमार जी के आदर्श जीवन में दिखाई देते हैं और उन शुभ संस्कारों की धरोहर की प्राप्ति को आप अपनी असली दौलत मानते हैं। आपकी प्रारंभिक शिक्षा आपके गांव में ही संपन्न हुई और आपने अपनी कर्म भूमि भारत की राजधानी दिल्ली को बनाया। अपने कठिन परिश्रम और पुरुषार्थ के बल पर प्रत्येक कार्य को आपने पूरे योजनाबद्ध तरीके से, सही समय पर, सही निर्णय लेने के अनुपम स्वभाव के अनुसार सफलता पूर्वक संपन्न किया और हर क्षेत्र में सदैव सफलता के परचम लहराए। परिणाम स्वरूप आज आप एक सफल इन्वेस्टमेंट बैंकर के रूप में सुप्रसिद्ध हैं और राष्ट्र निर्माण और मानव सेवा के क्षेत्र में नित नए आयाम स्थापित कर रहे हैं।

अनुकरणीय विशेषताएं

आपके जीवन की अनेक विशेषताओं में नियमित दिनचर्या अपने आपमें अनुपम उदाहरण है। अनुशासन प्रिय श्री राजकुमार जी को सुबह जल्दी उठना, नियमित व्यायाम और प्राणायाम करना अत्यधिक पसंद है। आप सुबह को दिवस का बचपन मानते हैं, और इस विषय में आपका कहना है कि जो व्यक्ति अपनी सुबह को अर्थात बचपन को चुस्ती-फुर्ती और ताजगी से भरपूर कर लेता है उसका पूरा दिन उत्साह से व्यतीत होता है। इसलिए आप सुबह की सैर कभी नहीं भूलते, ईश्वर की भक्ति, प्रार्थना, उपासना से दिन की शुरुआत करते हैं। दृढ़ संकल्प शक्ति और आत्मविश्वास आपका विशेष संबल है। किसी भी क्षेत्र में कितनी भी विषम परिस्थितियां सामने क्यों न हों अपने मजबूत मनोबल के साथ आप आगे से आगे बढ़ते ही जाते हैं और सफलता प्राप्त करके ही दम लेते हैं।

शिव संकल्पों के धनी

आपके जीवन की सफलताओं का सार निष्कर्ष के रूप में अगर देखा जाए तो संकल्प शक्ति के साथ आपके परिश्रम और पुरुषार्थ का सामंजस्य अद्‌भुत दिखाई देता है। आप केवल अपने लिए और अपनों के लिए ही संकल्प नहीं करते बल्कि मानव मात्र के कल्याण की ही ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। यह सर्वविदित है कि अगर संकल्प के साथ शिव जुड़ जाए तो वह कल्याण कारी भी सिद्ध होता है। आप शिव संकल्पों के धनी हैं, हमेशा मानवता की भलाई के ही संकल्पों की साधना करते हैं और सफलता प्राप्त करके उसका श्रेय ईश्वर को देते हुए कहते हैं कि **हे प्रभु, मेरे करने से कुछ नहीं होता और तुम्हारे करने से कुछ नहीं बचता, मैं तो केवल निमित्त मात्र हूं, जो भी कुछ सोचता हूं, करता हूं सब कुछ आपकी ही कृपा से संभव होता है।** जो व्यक्ति ऐसे सुंदर मनोभाव के साथ संकल्प करता है उसके संकल्प तो पूर्ण होते ही हैं और साथ में ईश्वर की असीम अनुकंपा भी प्राप्त होती है।

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के प्रेरक एवं पोषक श्री राजकुमार जी

मजबूत मनोबल के स्वामी

दुबले-पतले छरहरे बदन के श्री राजकुमार जी का मनोबल बहुत मजबूत है। आप एक बार जो मन में ठान लेते हैं तो फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखते। इस विषय में आपका कहना है कि **'मन के हारे हार है और मन के जीते जीत' 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'** मन से ही व्यक्ति महान बनाता है और मन के कारण ही व्यक्ति पतन की ओर जाता है। इसलिए आप सदैव एक संतुलित मन के साथ निरंतर आगे से आगे बढ़ रहे हैं। आपका सरल सौम्य स्वभाव अपने आप में एक विशेष पहचान है।

काम करते रहो, नाम जपते रहो

आप बोलने से ज्यादा कर्म करने पर विश्वास करते हैं। कम बोलना और ज्यादा करना आपकी अद्‌भुत विशेषता है। इस पर आपका कहना है कि **'काम करते रहो और प्रभु का नाम जपते रहो, जीवन में प्रसन्नता के साथ आगे बढ़ते रहो'**

शिक्षा सेवा है, महान यज्ञ

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा और विश्वास अत्यंत प्रशंसनीय है। आर्य समाज के वैदिक सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं के प्रति आपका प्रेम स्तुत्य है। आर्य समाज द्वारा संचालित सेवा के सभी कार्य आपको बहुत ही प्रेरित करते हैं लेकिन शिक्षा सेवा अभियान आपको सबसे ज्यादा प्रिय है। शिक्षा सेवा के विषय में आप की मान्यता है कि कोई भी व्यक्ति किसी को धन देकर या अन्य साधन देकर बड़ा नहीं बना सकता, लेकिन अगर किसी को पढ़ा लिखाकर योग्य बना दिया जाए तो वह अपने आप में एक महान यज्ञ है। इसी भावना से आप आर्य समाज द्वारा संचालित आर्य प्रतिभा विकास केंद्र के समर्पित अधिकारी और कार्यकर्ता हैं। आप की प्रेरणा और सहयोग से आर्य समाज द्वारा जो पूरे भारत के कोने कोने से प्रतिभावान विद्यार्थियों को जोकि योग्य होने के बावजूद भी साधन सुविधाओं के अभाव में देश की सेवा करने से वंचित रह जाते थे, संघ लोक सेवा आयोग के उच्च पदों पर सेवा करने से वंचित रह जाते थे, उनमें क्षमता तो होती थी लेकिन आर्थिक रूप से अभावग्रस्त होने से उनके सपने उनके मन में ही रह जाते थे। प्रतिभाएं दबी की दबी ही रह जाती थी, ऐसे महान प्रतिभावान बच्चों के उत्थान और राष्ट्र निर्माण में आपका सहयोग और योगदान अपने आप में अद्‌भुत और अनुपम है।

आर्य समाज के इस सेवा कार्य के लिए आपका विचार है। **'पत्ते कितनी ही कोशिश करें फूल को छुपाने की लेकिन उनमें इतनी ताकत नहीं कि वो उस फूल की खुशबू को छिपा सकें,'** जो विद्यार्थी मेहनत और ईमानदारी से पूरी शक्ति के साथ परिश्रम और पुरुषार्थ करता है, उसको सफलता अवश्य मिलती है, लगन से ही व्यक्ति गगन तक पहुंचता है। इसलिए आपका विद्यार्थियों को सदा यही संदेश रहता है कि सही समय पर, सही निर्णय और सही योजना के साथ पूरा परिश्रम और पुरुषार्थ करो सफलता आपके कदम चूमेगी।

गतिशील शिक्षा सेवा केंद्र

आप हमेशा गरीब, अभाव ग्रस्त बच्चों को के निर्माण में अपना समय, शक्ति और साधन समर्पित करते हुए आ रहे हैं। इस क्रम में आपके द्वारा संचालित एवं प्रायोजित निम्न शिक्षण संस्थान गतिशील है।

सुशील राज आर्य विद्या ज्ञान मंदिर, गोविंदपुरी,
सुशील राज आर्य विद्या ज्ञान मंदिर, ईस्ट आफ कैलाश,
सुशील राज आर्य कंप्यूटर प्रशिक्षण संस्थान, करोल बाग,
आर्य समाज द्वारा सुशील राज आर्य प्रतिभा विकास केंद्र, हरिनगर

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर आयोजित प्रगति प्रोजेक्ट के अंतर्गत छात्रवृत्ति वितरण कार्यक्रम में श्री विनय आर्य जी ने आपकी ओर से यह सार्वजनिक घोषणा करते हुए कहा था कि आगामी वर्षों में आप 200 विद्यार्थियों को आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के माध्यम से दिल्ली में उच्च सेवा के लिए आवास, भोजन और कोचिंग की सुविधा प्रदान करेंगे। इस पर उपस्थित जन समुदाय ने अभूतपूर्व गौरव का अनुभव किया था और तालियां बजाकर आपका अभिनन्दन भी किया था। आपका यह वृहद संकल्प ईश्वर की कृपा से पूर्ण हो, ऐसी हमारी प्रभु से प्रार्थना है।

जीवन का लक्ष्य और उददेश्य

आपके जीवन का लक्ष्य बड़ा विशाल और महान है। आधुनिक परिवेश में सुयोग्य विद्यार्थियों को उनके उत्तम लक्ष्य और सेवाभावी उद्देश्य को सफल बनाना ही आपका संकल्प है। इस विशेष संकल्प की पूर्ति में आपकी धर्मपत्नी जी का योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आप सदैव हंसते, मुस्कराते हुए परोपकार के कार्यों को स्वयं भी आगे बढ़ते रहें और दूसरों को भी प्रेरणा देकर कल्याण मार्ग के पथिक बनाते रहें। आपके स्वस्थ, सुखद और सुदीर्घ जीवन की शुभकामनाएं और हार्दिक बधाई।

–आचार्य अनिल शास्त्री

Sun, Earth, other Planets, Day, Night, Year and Seasons

Continuing the last issue

The relevant Vedic passages, covering all what is stated above under this topic in principle, are given hereunder :—

I. 'That (earth) is sustained properly by the all doing (giving light, heat, vitamin, juice, fertility, wind, monsoon, rain, etc.) sun (source of energy), giving properly all glorious things and seasons'—Yajuived, 12.61 ("Thaam vishhvair-dhevair-rithubhih samvidhaanah prajaapathir-vishhvakarmaa vi munchathu").

2. 'The resplendent (sun) shines in between the radiant region and the planets (earth, etc.). The rays, bearing the .fire-ball (sun), give nourishments'—Yajurved, 12.2 ("Dhyaavaakshaamaa rukmo-anthar-vibhaathi dhevaa-agnim dhhaarayan-dhravinhodhaah").

3. '0 the Effulgent, Supreme Permeator, destroy not the ray-borne sun, (cause of) the speed of wind, sustainer of waters, created in the midst of sky, feeder of rivers and bringer in of clouds'—Yajurved, 13.42

4. 'The encircling (rotating) earth, along with the satellite (moon), goes round the sun, and this universe, along with all, moves in position'—Yajurved,, 20.23 ("Samaavavarthi prithhivee samushaah samu sooryah; Samu vishhvamidham jagath").

5. 'The radiant sun causes months (through its movement north and south)'—Yajurved, 24.37 ("Maasaan kashhyapah"). The Yajurved, 7.30, speaks of twelve solar months as Madhu (Chaitra), Madhav (Vaishakh), Shukra (Jyeshtha),. Shuchi (Ashadh), Nabhas (Shravan), Nabhasya (Bhadrapad), Isha (Ashvin), Urja (Kartik), Sahas (Agrahayan), Sahasya (Paush), Tapas (Magh) and Tapasya (Falgun) —Yajurved, 13.25; 14.6; 14.15; 14.16; 14.27; 15.57, quoted a little later,. also elaborate the six seasons with reference to the same.

6. 'The rays of these (suns) spread straightward, may be below or may be above. They do bear vitamins. They are full of great prowess. The self-radiant (suns) are near (not far off). The Prime Mover is beyoad'—Yajurved, 33.74; Rigved, 10.129.5

7. '0 the learned leader (king), proceed in the eastern direction before the sun and become brilliant here (through the action of the sun's rays, the ultimate source of vitamins)"—Yajurved, 17.66 ("Praacheemanu pradhishhaam prehi. vidhvan-agneragre puro-agnir-bhaveha").

8. 'The waterful waves of sea rise up and, through the action of the sun's rays, gather up as water vapours. Of the form of the rain water in the cave (of the celestial) and of the rain (on the earth), the water sucking capacity of the rays of the sun is the cause there'—Rigved, 4.58.1; Yajurved,. 17.89

9. 'Chaitra (Madhu or advent of pleasantness or spring)' and Vaishakh (Madhav or latter part of spring) comprise the spring season months and constitute as intermediaries (between two revolutions) at the end of the solar revolution (the earth's annual revolution right round the sun)'—Yajurved,. 13.25 ("Madhhushhcha maadhhavashhcha vaasanthikaav— rithoo-agneranthah shhleshosi").

10. Jyeshtha (Shukra, heatful, powerful or hot summer) and Ashadh (Shuchi or scorching summer) comprise the summer season months and constitute as intermediaries (between two revolutions) at the end of the solar revolution (the earth's annual revolution right round the sun)'—Yajurved, 14.6 ("Shhukrashhcha shhuchishhcha graishmaavrithooagnerantnah shhleshosi").

11. 'Shravan (Nabbas or the advent of rains or covered sky) and Bhadrapad (Nabhasya or ripe rains or pouring out of sky) are the rainy season months and constitute as intermediaries (between two revolutions) at the end of the solar revolution (the earth's annual revolution right round the sun)'—Yajurved, 14.15 ("Nabhashhcha nabhasyashhcha vaarshikaavrithoo-agneranthah shhleshosi").

To be continued in next issue

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

तीर्थ–स्तुति–स्तुति का फल–निन्दा

20–तीर्थ

विद्याभ्यास विचार शुभ,
ईशोपासन, धर्म ।
ब्रह्मचर्य व्रत सत्य, जय–इन्द्रिय,
उत्तम कर्म ।।26।।
दुख सागर से जीव
को ये देते हैं तार ।
इसीलिए ये 'तीर्थ' हैं,
यह है सत्य विचार ।।27।।

21–स्तुति

प्रभु या किसी पदार्थ के
करके गुण का ज्ञान ।
कथन–श्रवण ही सत्य है,
'स्तुति' की पहिचान ।।28।।

22–स्तुति का फल

जो कि गुणों को जानकर
हो पदार्थ में प्रीति ।
'स्तुति–फल' कहते उसे
सुजनों की यह रीति ।।29।।

23–निन्दा

मिथ्या ज्ञान बखान में
जो आग्रह का रूप ।
गुण तज, अवगुण रोपना
'निन्दा' अवनति कूप ।।30।।

साभार :

सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

प्रेरक प्रसंग

एक ऐसा अभियन्ता जिसने जीवनभर कभी घूँस न ली

पण्डित श्रीगंगारामजी बजवाड़ा जिला होशियारपुर (पंजाब) में जन्मे एक आर्यपुरुष थे। इसी कस्बे में महात्मा हंसराज जी का जन्म हुआ था। पण्डित गंगारामजी ने अमृतसर में ऋषि दयानन्दजी के दर्शन किए थे। आपने पंजाब मैट्रिक में प्रथम स्थान प्राप्त किया, फिर ओवरसीयर बने।

आपने 28 वर्ष तक सरकारी नौकरी की, परन्तु विचित्र बात यह कि जितना वेतन पहले दिन लिया था, उतने पर ही सेवा मुक्त हुए। उन दिनों कोई वेतनमान भी न होते थे, परन्तु वेतन–वृद्धि तो होती ही थी। आपके कार्य की, प्रामाणिकता की, दक्षता की सब अंग्रेज अधिकारी भी प्रशंसा करते थे, परन्तु आपने कभी वेतन वृद्धि माँगी ही नहीं।

आप सबडिविजनल आफिसर भी थे। इनके कार्य की विस्तृत रूपरेखा जानने वाला, इनके ऊपर कोई भी अधिकारी नहीं था तथापि आपने सारे जीवन ऐसी अर्थ–शुचिता दिखाई कि अपने–बेगाने सब आपके चारित्रिक गुणों का यशोगान करते थे। जब अन्य अभियन्ता ओवरसियर दोनों हाथों से धन बटोरा करते थे तब आपने कभी ऐसा सोचा तक नहीं।

पण्डित गंगारामजी ने स्वयं इसके विषय में लिखा है, ''मैं बहुत कुछ गड़बड़ कर सकता था, परन्तु मैं महर्षि दयानन्द और उसके आर्यसमाज का कृतज्ञ हूँ कि उसका सेवक होने के कारण मेरा मन ऐसे अनुचित कार्यों की ओर कभी प्रवृत्त नहीं हुआ।''

शेख असगरअलीजी मुल्तान के डिप्टी कमिश्नर भी रहे, आपने पण्डितजी के कैरक्टर रौल (चरित्र–पंजिका) में एक से अधिक बार लिखा था–पूर्णतया प्रामाणिक।

पण्डितजी को इतना सन्तोष कैसे प्राप्त था? वे स्वयं लिखते हैं कि मुजफ्फरगढ़ में उन्हें दलितों, अनाथों व दुखियाजनों तथा आर्यसमाज की सेवा का जो विस्तृत क्षेत्र मिल गया, इसे वे सर्वश्रेष्ठ धन व प्रभु की देन मानते थे।

दूर भगे दुरभाव, जगी जब मन में ज्योति

श्री केशवप्रसादजी भटनागर उत्तरप्रदेश में एक रेलवे कर्मचारी थे। आप अपने किसी सगे–सम्बन्धी के सत्संग से आर्यसमाजी बन गये, परन्तु आपके पिताजी बड़े मांसाहारी व सुरापान करने वाले व्यक्ति थे। केशवप्रसादजी पर आर्यसमाज का ऐसा गहरा रंग चढ़ा कि कोई भी व्यसन इन्हें छू न सका।

केशवप्रसादजी का विवाह हो गया। पत्नी पर भी इनके विचारों का प्रभाव पड़ा। दोनों ऐसे विशुद्ध शाकाहारी थे कि जहाँ–कहीं मांस बनता था, वहाँ भोजन ही न करते थे। पिताजी का जब जी चाहता घर में मांस पका लेते। जिस दिन ये मांस पकाते, केशवप्रसादजी व उनकी पत्नी यह कह देते कि आज हमें किसी के यहाँ जाना है। ये घर भोजन ही न करते। किसी शाकाहारी ढाबे पर जाकर भोजन कर लेते। देर तक इनका ऐसा नियम रहा।

एक दिन केशवप्रसादजी के पिता के एक वृद्ध मित्र ने उन्हें खूब लताड़ा, ''तुम्हें लज्जा नहीं आती कि तुम बुढ़ापे में भी गुलछर्रे उड़ाते हो। चटोरपना तुम नहीं छोड़ सकते। तेरा बेटा व बहू ढाबे पर भोजन करते हैं। कुछ तो शर्म करो।''

इस लताड़ से वृद्ध पिता ने कहा कि भविष्य में वह घर पर मांस न खाएगा और न ही पकाएगा।

पुत्र ने रेलवे के मांसाहारी नौकर से कह दिया कि जिस दिन इन्होंने मांस खाना हो, इन्हें तुम कहीं बाहर बनाकर खिला दिया करो। पैसे मैं दे दूँगा। उस युग में युवक बड़ों के सामने नहीं बोल सकते थे, अतः केशवप्रसादजी अपने पिता को निर्भीक होकर न कह सके कि मैं न मांस खाऊँगा, न खाने दूँगा तथापि उन पुरुषों का आचरण कितना ऊँचा था कि आर्य विचारधारा कर लेते थे।

'ओ३म् वाक् वाक्' यह आर्ष वचन बोलने के वे ही अधिकारी हैं जो मांस, सुरापान, अण्डा, मीन (मछली) आदि का खान–पान एकदम छोड़ देते हैं।

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पृष्ठ 2 का शेष

बन चुके हैं। मोटे अनाज इस लड़ाई में हमारी मदद कर सकते हैं। अगर नियमित रूप से ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी आदि का उपयोग किया जाए, तो हृदय व पैनक्रियाज की सेहत को संभाला जा सकता है। शरीर को नुकसान पहुंचाने वाली कई कीटाणुओं की निकासी के लिए ये बहुत उपयोगी हैं। ये कई प्रकार के कैंसर से बचाव के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

बाजरा, ज्वार व रागी

बाजरा लौहलवण से भरपूर होता है इसलिए यह खून की कमी को दूर करने में बहुत सहायक है। ज्वार हड्डियों के लिए अच्छी मात्रा में कैल्शियम, खून के लिए फॉलिक एसिड व कई अन्य उत्तम पोषक तत्व प्रदान करता है। इसी प्रकार से रागी एकमात्र ऐसा अनाज है जिससे कैल्शियम भरपूर मिलता है। और जो लोग दूध नहीं लेते लेकिन इसका सेवन करते हैं, उनमें कैल्शियम की कमी नहीं होती। हालांकि सभी मोटे अनाज उतनी ही मात्रा में प्रोटीन देते हैं जितना कि गेहूं, चावल से मिलता है, यानी कि 100 ग्राम कोई भी मोटा अनाज खाएंगे तो 7-12 ग्राम तक का प्रोटीन हमें मिलेगा। परंतु अंतर ये है कि प्रोटीन जो अमीनो एसिड का बना होता है इसकी गुणवत्ता गेहूं और चावल के प्रोटीन से बेहतर पाई गई है।

मक्का

मक्के का पीला रंग ये दर्शाता है कि इसमें विटामिन-ए यानी वो विटामिन जो त्वचा और आंखों के लिए अच्छा होता है और बीमारियों से लड़ने की ताकत देता है।

जौ

ये बहुत सारे सूक्ष्म पोषक तत्वों का भंडार है। इसमें खासकर मैंगनीज और सेलेनियम पाया जाता है जो त्वचा को स्वस्थ रखने में मददगार होता है। यह ब्लड शुगर नियंत्रित करने के लिए आवश्यक होता है। इसी के साथ-साथ क्रोमियम, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम, विटामिन-बी1 जिसे थायमिन कहते हैं और नायसिन का भी अच्छा स्रोत होता है।

-संपादक

पृष्ठ 3 का शेष

लक्ष्य चुनेंगे तो आपको कई प्रकार की हानियां उठानी पड़ेंगी। व्यर्थ लक्ष्य की वजह से आप जीवन में कभी पूर्ण सफल नहीं हो पाएंगे तथा सदा भटकते रहेंगे। जिन लोगों के जीवन का लक्ष्य सही होता है वे अपने कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त करते हैं तथा ऐसे लोग कभी इधर-उधर भटकते भी नहीं हैं। कुसंग के प्रभाव से आदमी बुरे उद्देश्य की ओर चलने का निर्णय ले लेता है। जब हम जान-बूझकर कांटो-भरा रास्ता अपना लेते हैं तो हमें पग-पग पर दुःख और परेशानी मिलती है। गलत लक्ष्य चुनकर हम किसी के जीवन का भला नहीं कर सकते और न स्वयं हमारा ही हित हो पाता है। गलत रास्ते जीवन के उलझाने वाले होते हैं जिसके कारण मानव का स्वभाव दूसरों को दुःख देने का या परेशान करने का हो जाता है।

सही लक्ष्य से सफलता और सुख-शांति की प्राप्ति

यथार्थ लक्ष्य जीवन में सफलता ही नहीं बल्कि सुख-शांति भी दिलाता है। वह मार्ग हमेशा भलाई और परोपकार का ही होता है। जिस मार्ग से होकर व्यक्ति स्वार्थी बन जाए उसे सही नहीं कहा जा सकता। यदि हमारा लक्ष्य सही है तो हमें अपने कर्म से संतोष होना चाहिए। जो लोग रात-दिन दूसरों की सेवा में लगे रहते हैं, वे परोपकारी होते हैं। दूसरों के दुःख दूर करने के कारण उन्हें जीवन में कभी दुःख की प्राप्ति नहीं होती। अपने जीवन-लक्ष्य में हम परोपकार को भी शामिल करें क्योंकि इसके (परोपकार) बिना मनुष्य को कभी स्थायी सुख-शांति की प्राप्ति नहीं होती। जो लोग अपने ही स्वार्थ के कार्यों में व्यस्त रहते हैं वे कार्य-बोझ बढ़ जाने पर तनावग्रस्त एवं दुःखी हो जाते हैं जबकि परोपकारी व्यक्ति कार्य बढ़ने पर प्रसन्न रहता है।

यथार्थ लक्ष्य से सफलता की प्राप्ति

यदि हमें जीवन के वास्तविक आनंद की प्राप्ति करनी है तो हमको यथार्थ लक्ष्य चुनना चाहिए। यथार्थ लक्ष्य वह लक्ष्य है जिसमें मानव के व्यक्तिगत लाभ के साथ-साथ दूसरों का भी कल्याण समाया होता है। पूर्व में हुए महापुरुषों ने जिस लक्ष्य का अनुसरण किया वह वास्तव में जीवन का यथार्थ लक्ष्य ही था। उसी महान् लक्ष्य की वजह से वे (महापुरुष) अपने जीवन में परमानंद की प्राप्ति कर सके। महर्षि दयानन्द का एक ही लक्ष्य-मानव का परोपकार करना था। उन्होंने, मनुष्यों को अज्ञान, अंधकार से मुक्ति दिलाकर, संकीर्ण विचारों की गुलामी से आजादी दिलाकर तथा मानव-मानव के बीच प्रेम, एकता व भाईचारे की भावना उत्पन्न करके किया। जीवन में पूर्ण सफलता मनुष्य को यथार्थ लक्ष्य से ही मिल सकती है, अन्य किसी चीज से नहीं।

।।ओ३म्।।

सत्यार्थ प्रकाश

पर आधारित परीक्षा

- रविवार, 25/06/23, दोपहर 12:00 से 1:00 बजे।
- 15/6/23 तक पंजीकरण अनिवार्य।
- पंजीकरण शुल्क 100/-₹ श्री विनोद कुमार मो.न. 9810197504 पर जमा कराए।
- स्थान: आर्य समाज मन्दिर इन्द्रापार्क, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली: 110045
- परीक्षा उपरांत ऋषि लंगर।
- परीक्षा परिणाम उसी दिन (3 बजे)।
- सभी परीक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र दिया जायेगा।
- प्रति प्रश्न के ठीक उत्तर का पुरस्कार 1000₹, जिसके सभी दस उत्तर ठीक होंगे उसे नकद 11,000₹ राशि दी जाएगी।
- निर्णायक मण्डल का निर्णय सर्वमान्य होगा।

संयोजक
सुखवीर सिंह आर्य
मो. 9350502175

आयोजक
आर्य समाज मन्दिर इन्द्रापार्क
प्रधान: महाशय प्रीतम सिंह आर्य
मो. 8447434774

अधिकांश रूप से यह अनुभव किया जाता है कि स्थान विशेष पर या समय विशेष पर वैदिक सूक्तियों और प्रेरक सुभाषितों की आवश्यकता होती है। जैसे स्कूल में, गौशाला में, आश्रमों में, खेल के स्थानों पर, पर्व, उत्सव, सम्मेलन, महासम्मेलन, प्रभात फेरी, शोभायात्रा आदि में प्रेरणाप्रद प्रमाणिक वाक्य लिखने के लिए हम समय-समय पर विचार करते हैं। किन्तु उस समय पर हमें वह उपयोगी मैटर मिल नहीं पाता। अत: आर्य संदेश के सुधी पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए शास्त्रोक्त वचनों के प्रचार-प्रसार हेतु हमने एक नियमित कालम प्रारम्भ किया है। जिसमें हर बार कुछ सूक्तियां निरंतर प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा। -संपादक

वैदिक सूक्तियां

31- असंगोऽयं पुरुष इति
-सांख्य -01-15
(यह जीवात्मा स्वरूप से असंग है, अवस्था परिणाम रूप देह धर्म से प्रथक है।)

32- प्रकृति
सत्तवरजस्तमसा साम्यावस्था प्रकृति -सांख्य -01-26
(सत्व, रज, और तम की साम्यावस्था प्रकृति है।)

33- दया-करूणा
मैत्रीकरूणामुदितोपेक्षाणां
-योग -01-33
(धर्मात्मा सत्पुरुषो का संग, दुखियो पर दया, पुण्यात्माओं के प्रति प्रसन्नता प पापियों की उपेक्षा सदा करो।)

34- अहिंसा
माहिꣳसीस्तन्वा प्रजा:
-यजु -12-33

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मन्दिर महावीर नगर
नई दिल्ली-110018

प्रधान : श्री यशपाल आर्य
मंत्री : श्री माया राम शास्त्री

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
10 एवं 20 किलो
की पैकिंग में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

महर्षि दयानन्द की प्रेरक शिक्षाएं

(न) वर्ग

नमस्ते का महत्त्वः- 'पुरातन काल में आर्य लोग नमस्ते' ही कहा करते थे। यह शब्द वेदों में भी अनेक बार आया है। आर्यजनों में इसी का प्रचार होना चाहिए।
(श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृ. 404)

नमस्ते से अभिवादनः- नमस्ते शब्द सब आपस में बोलें। छोटा प्रथम बोले बड़ा पीछे बोले। **(ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से सम्बद्ध महत्त्वपूर्ण अभिलेख पृ. 5)**

नमस्ते का प्रभावः- नमस्ते का अर्थ पाँव पकड़ना नहीं है, उसका अर्थ यह है सम्मान, सत्कार। सभी ऊँच-नीच और छोटे-बड़े मेल-मिलाप में सम्मान सत्कार के भागी हैं। **(श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृ. 404)**

नमस्ते का प्रचलन होना चाहिएः- हिंदुओं में अर्थात् आर्यो में 'नमस्कार' कहने और लिखने की जो परंपरा चालू है, उस पारंपारिक अभिवादन 'नमस्कार' के स्थान पर 'नमस्ते' कहने और लिखने की प्रथा प्रचलित होनी चाहिए। **(ऋषि दयानन्द और आर्य समाज से सम्बद्ध महत्त्वपूर्ण अभिलेख पृ. 27)**

नमस्ते का अभिवादन योग्य हैः- विचार करके जैसा शब्द जो पहले इस देशवासियों में प्रचलित था, चालू क्यों न किया जाए? इससे सब आर्यसमाजों में नमस्ते का उच्चारण करना ठीक है, जैसा कि सब दिन से महर्षि लोगों में प्रचार था और नमस्ते शब्द वेदों में भी आया है।
(पं. लेखराम कृत म. दयानन्द का जीवन चरित्र पृ. 438)

नमस्ते से उत्पन्न भावः- जब कोई पूज्य और प्रतिष्ठित मनुष्य घर पर आता है तो उसे देखकर अभ्युत्थान और झुककर सम्मान देने को जी चाहता है। पुत्र से प्यार करने का भाव उत्पन्न होता है। नौकर चाकरों को अन्न-जल और आइए बैठिए आदि शब्दों से सत्कृत करने की हृदय प्रेरणा करता है। ऊपर कहे सारे भावों का प्रभाव 'नमस्ते' से तो हो जाता है, परन्तु उस समय परमेश्वर का नाम लेना असंगत है। आत्मगत भावों के विपरीत है। जो भाव भीतर हो उसी को बाहर प्रकाशित करना शोभा देता है।
(श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृ0 404)

सोमवार 15 मई, 2023 से रविवार 21 मई, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं० डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 17-18-19 मई, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 17 मई, 2023

प्रतिष्ठा में,

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16	मुद्रित मूल्य ₹60	प्रचारार्थ ₹40
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16	₹100	₹60
पॉकेट संस्करण	₹80	₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	₹150	₹100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8	₹150	₹100
उपहार संस्करण	₹1100	₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	₹200	₹130
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	₹250	₹170

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह